B.Ed - 2nd Year **Nakul Sah**

Biological Science **Assistant Professor**

Course- 7(b)

Lecture – 13

Kinds of Curriculum
पाठ्यचर्या के प्रकार

पाठ्यचर्या के प्रकार (Kinds of Curriculum)

पाठ्यचर्या वह योजना है जिसका सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है। शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार पाठ्यचर्या निर्मित होने के बाद भी विचारों में परिवर्तन आने के कारण पाठ्यचर्या बदलती रहती है। पाठ्यचर्या के निम्नलिखित प्रकार है :–

1. विद्यार्थी केन्द्रित पाठ्यचर्या (Student Central Curriculum)
2. विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या :–(Subject Central Curriculum)
3. सक्रियता केन्द्रित पाठ्यचर्या (Activity Central Curriculum)
4. अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या (Experience Central Curriculum)

1. विद्यार्थी केन्द्रित पाठ्यचर्या (Student Central Curriculum)

विद्यार्थी केन्द्रित पाठ्यचर्या (Student Central Curriculum) में विद्यार्थियों को आवश्कताओ, रूचियो, संवंगो तथा अभिप्राय को आधार बनाया जाता है। पाठयचर्या क्रियामूलक होती है। ओर विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्ण सीखने का अवसर प्रदान करती है। यह विद्यार्थियों पर सीखने का उत्तरदायित्व डाल देती है। पाठ्यचर्या में विद्यार्थी की योग्यताओं और रूचियों का

विशेष ध्यान रखा जाता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से छात्रों की रूचि व रूझान का पता लगाया जाता है। आज विज्ञान के युग में शिक्षा सबसे बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है कि शिक्षा विषय केन्द्रित न होकर छात्र या विद्यार्थी केन्द्रित हो गई है।

रेमांट के अनुसार :–

"शिक्षा बालक के लिए है अतः पाठ्यचर्या की रचना बालक को केन्द्र बनाकर की जानी चाहिए "।

सर जेम्स एम.ली के अनुसार :–

" छात्र केन्द्रित पाठ्यचर्या वह है जो पूर्णतः व समग्ररूप से सीखने वाले में निहित होती है अर्थात बालक में निहित होती है "।

2. विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या (Subject Central Curriculum) :–

विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या परम्परावादी पाठ्यचर्या है इसमें केवल विषय का ज्ञान देने पर बल दिया जाता है। इसलिए यह पाठ्यचर्या एक निश्चित ढांचे में बंद रहती है। और इसमें कृत्रिमता रहती है। यह पाठ्यचर्या विद्यार्थियों से निर्लिप्त, बुजुर्गो द्वारा अपनी इच्छा से तैयार की जाती है और बुजुर्गो की इच्छाएं रूचियां व आवश्यकताएं जबरदस्ती बच्चों के उपर लादी जाती है।

शिक्षाशास्त्री व शिक्षा अधिकारी ऊँचे उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या का निर्माण करते है लेकिन प्रत्यक्ष रुप से विद्यार्थियों की रुचियों , आवश्यकताओं व क्षमताओं पर विचार नही किया जाता है। इसका कार्यान्वयन यांत्रिक ढंग से होता है जिससे अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं होती है। इस पाठ्यचर्या में विषय को बहुत अधिक आवश्यकता से अधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षक पाठ्यचर्या के अनुसार इस बात पर अधिक ध्यान दते है कि क्या सिखाना है। इसके विपरीत किस प्रकार सिखाना चाहिए इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसलिए पुस्तको पर अधिक ध्यान केन्द्रित हो जाता है। विद्यार्थी रहने पर अधिक ध्यान दते हैं न कि समझने पर। रहने वाला ज्ञान स्थायी नहीं होता और इस प्रकार का ज्ञान प्रत्यक्ष जीवन में किसी काम का नहीं होता। यह जीवन की समस्याओं को सुलझाने व उनका मुकाबला करने की शक्ति नहीं देता। इससे छात्रों में सृजनात्मक शक्ति को भी प्रेरणा नहीं मिलती। इससे संस्कृति की भी अभिव्यक्ति नहीं होती है। यह पाठ्यचर्या प्रगतिशीलता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। आधुनिक वैज्ञानिक नहीं होता है। यह पाठ्यचर्या अधिक संकुचित व अमनोवैज्ञानिक होती है।

3. सक्रियता केन्द्रित पाठ्यचर्या (Activity Central Curriculum)

डीवी. के अनुसार

''शब्द ज्ञान की तुलना में क्रिया द्वारा स्वानुभव मिलने वाला ज्ञान अधिक प्रभावशाली होता है।''

महात्मा गाँधी के अनुसार

''क्रिया प्रद्यान पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय विद्यालय को क्रिया का केन्द्र होना चाहिए। वह सिर्फ जानकारी देने के बजाय प्रयोग, अनुसंधान में सही मदद देने का स्थान है।''

अतः बचपन से ही बालक क्रियाशील होता है।

4. अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या (Experience Central Curriculum)

अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या में विद्यालय तथा विद्यालय के बाहर प्राप्त होने वाले अनुभवों का समावेश होता है। जब विद्यार्थी स्नेह सम्मेलन में भाग लेते है खेल के मैदान में खेलते है प्रयोगशाला में प्रयोग करते है, शैक्षिक पर्यटन में जाते हैं और किसी प्रोजेक्ट पर कार्य करते हैं इससे उन्हे जो अनुभव होते हैं उन्हे प्रत्यक्ष अनुभव कहते हैं । कक्षा में जब शिक्षक, शिक्षण कार्य करता है, विद्यार्थी पुस्तक पढ़ते है रेडियों सुनते है, टी.वी. देखते है तब उन्हे जो अनुभव प्राप्त होंता है। वे अनुभव स्थायी व फलदायी होते है व्यक्ति के नए अनुभव जब पुराने अनुभवो ं से मिल जाते है तो व्यक्ति की मानसिक शक्ति को बढ़ा देते है जैसे व्यक्ति को ये अनुभव है कि आग पर पैर रखने से जल जाता है और जब पैर आग पर पड. ही जाता है तो सच मे ं ही जल जाता है पुराना अनुभव जब नये में मिला तो स्थायी ज्ञान हो गया।

The End